B.A 2
Paper III

सिंचाई के साधन एवं सिंचाई के महत्व के कारण :-

"भारत में सिंचाई ही सब कुछ है; जल भूमि से अधिक मूल्यवान है, क्योंकि जब जल भूमि में दिया जाता है तो यह उसकी उपजाऊ शक्ति में कम-से-कम 6 गुनी तक वृद्धि करता है।

वास्तव में, भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में सिंचाई के महत्त्व के निम्नलिखित प्रधान कारण हैं:-

1. वर्षा की अपर्याप्तता - भारत में वार्षिक वर्षा का औसत 45" होता है। परंतु देश के भिन्न-भिन्न भागों में इसका वितरण एक समान नहीं है जिससे सिंचाई के कृत्रिम साधनों के बगैर अधिकांश भागों में ~~इसका वितरण एक~~ कृषि कार्य प्रायः असम्भव-सा हो जाता है। अतः वर्षा वाले स्थानों के लिए सिंचाई की व्यवस्था नितांत अनिवार्य हो जाती है।

2. वर्षा की अनिश्चितता तथा अनियमितता - भारत में वर्षा मौनसून से होती है। मौनसून की प्रकृति अत्यन्त अनिश्चित है। किसी वर्ष वर्षा बहुत अधिक होती है तो किसी वर्ष सूखा भी पड़ जाता है। वर्षा की अनिश्चितता से कृषि को मुक्त कराने के लिए भी सिंचाई के कृत्रिम साधनों की व्यवस्था आवश्यक है।

3. अधिक जल चाहने वाली फसलों के लिए - कुछ फसलें ऐसी भी हैं जिन्हें नियमित रूप से अधिक जल की आवश्यकता पड़ती है, जैसे- चावल, गन्ना आदि। अतः इन फसलों की खेती के लिए भी अधिकांश क्षेत्रों में कृत्रिम सिंचाई के साधनों की व्यवस्था करनी पड़ती है।

4. गहन कृषि एवं हरित क्रांति में सिंचाई का केन्द्रीय स्थान - भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्यान्न-संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गहन खेती आवश्यक हो जाती है और गहन कृषि के लिए सिंचाई, उत्तम खाद, बीज एवं औजार आदि की आवश्यकता पड़ती है इनमें सिंचाई

Scanned by CamScanner

का स्थान ही सार्वधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में, हरित क्रांति को संभव बनाने के लिए भी सिंचाई की भूमिका अविस्मरणीय रही है।

5. वर्ष में एक से अधिक फसल उपजाने के लिए — देश की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस बढ़ती हुई जनसंख्या को के भरण-पोषण के लिए गहन कृषि यानी वर्ष में दो या तीन फसलों की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए भी सिंचाई के कृत्रिम साधनों के आवश्यकता पड़ती है।

6. उपज की किस्म में सुधार के लिए — सिंचाई से उपज की मात्रा बढ़ने के साथ-साथ कृषि में भी सुधार होता है जिससे किसानों की आय बढ़ती है और उनके रहन-सहन का स्तर भी उन्नत होता है।

7. नयी भूमी पर कृषि संभव - भारत में पर्याप्त मात्रा में कृषि-योग्य बेकार भूमी भूमि है। सिंचाई के साधनों का विस्तार करके यह अतिरिक्त भूमि कृषि के अन्तर्गत लायी जा सकती है। ऐसी भूमि को सिंचाई के बगैर खेती के लिए कभी भी प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए, राजस्थान में राजस्थान नहर बन जाने से बहुत सारी नयी भूमि पर कृषि प्रारंभ हो गयी है और ~~मरुस्थल~~ मरुस्थल सदृश्य राजस्थान का बड़ा भाग हरे-भरे उपवन में बदल गया है। इस प्रकार सिंचाई के विस्तार से विस्तृत खेती (extensive cultivation) भी संभव है।

8. सरकारी आय में वृद्धि — सिंचाई की सुविधा में वृद्धि से सरकार की आय में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही तरह से वृद्धि होती है। प्रत्यक्ष रूप में सिंचाई कर से सरकारी आय में वृद्धि के अतिरिक्त परोक्ष रूप में अधिक उत्पत्ति होने से रेलों की आय तथा अन्य करों से प्राप्त आय भी बढ़ती है जिससे सरकारी खजाने से अधिक धन आता है।

9. यातायात की सुविधा — बड़ी-बड़ी नहरों से सिंचाई के साथ-साथ यातायात की सुविधा भी प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए, दामोदर नहर में 125 कि॰मी॰ तक स्टीमर चलते हैं जो कोयला ले जाने का कार्य करते हैं। इस प्रकार रेलों से तो केवल

Scanned by CamScanner

यातायात ही होता है नहरों से सिंचाई एवं यातायात दोनों संभव हो जाते हैं। इसी लिए इन ~~और~~ योजनाओं को बहुद्देशीय योजनाएँ भी कहा जाता है।

सारांश यह है कि भारतीय अर्थ-व्यवस्था में सिंचाई का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। किंतु कभी-कभी सिंचाई, विशेषत: नहरों ~~से~~ द्वारा सिंचाई से हानि भी होती है। अव्यवस्थित सिंचाई से तो कई बार अत्यधिक क्षति होती है। इनमें से निम्नांकित उल्लेखनीय हैं -

(क) भूमि की ऊपरी सतर पर नमक जमा हो जाता है जिससे रेहचट्ट मिट्टी (alkaline soils) की समस्या उत्पन्न होती है। इससे बहुत सी भूमि खेती के योग्य नहीं रह जाती।

(ख) मलेरिया एवं अन्य रोग उत्पन्न होने लगते हैं।

(ग) बाढ़ का भय बढ़ जाता है। किंतु सिंचाई की ये हानियाँ पानी के उचित निकास की व्यवस्था (Proper Drainage) तथा पक्की नहरों के निर्माण के द्वारा कम की जा सकती है।

Scanned by CamScanner

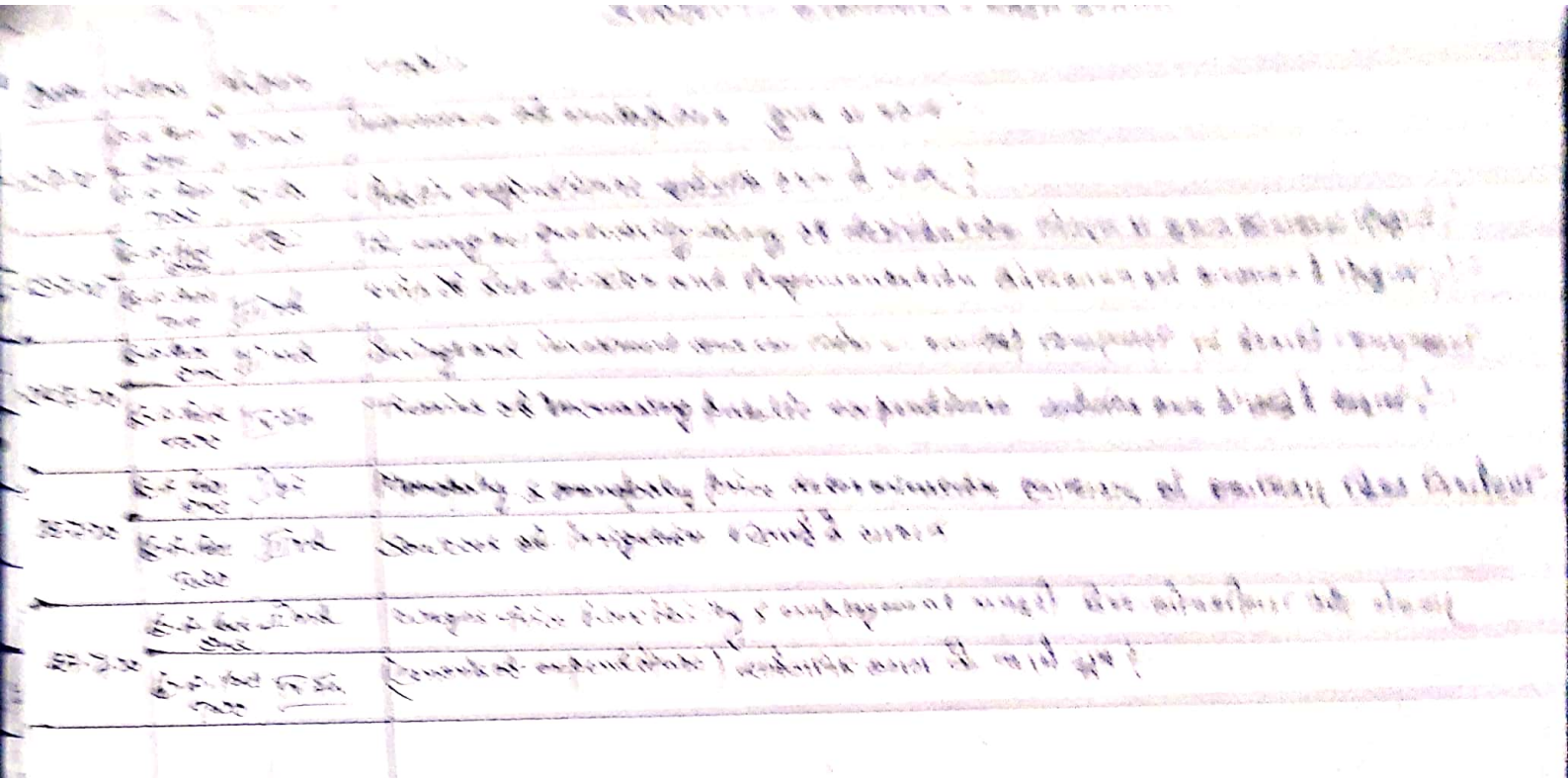

Scanned by CamScanner